गिल्लू

महादेवी वर्मा

0958CH01

गिल्लू

महादेवी वर्मा

सोनजुही[1] में आज एक पीली कली लगी है। इसे देखकर अनायास[2] ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया, जो इस लता की सघन हरीतिमा[3] में छिपकर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते ही कंधे पर कूदकर मुझे चौंका देता था। तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघुप्राण[4] की खोज है।

परंतु वह तो अब तक इस सोनजुही की जड़ में मिट्टी होकर मिल गया होगा। कौन जाने स्वर्णिम कली के बहाने वही मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो!

अचानक एक दिन सवेरे कमरे से बरामदे में आकर मैंने देखा, दो कौवे एक गमले के चारों ओर चोंचों से छूआ-छुऔवल[5] जैसा खेल खेल रहे हैं। यह काकभुशुंडि भी विचित्र पक्षी है—एक साथ समादरित[6] अनादरित[7], अति सम्मानित अति अवमानित।

हमारे बेचारे पुरखे न गरुड़ के रूप में आ सकते हैं, न मयूर के, न हंस के। उन्हें पितरपक्ष में हमसे कुछ पाने के लिए काक बनकर ही अवतीर्ण[8] होना पड़ता है। इतना ही नहीं हमारे दूरस्थ प्रियजनों को भी अपने आने का मधु संदेश इनके कर्कश[9] स्वर में ही देना पड़ता है। दूसरी ओर हम कौवा और काँव-काँव करने को अवमानना के अर्थ में ही प्रयुक्त करते हैं।

---

1. जूही (पुष्प) का एक प्रकार जो पीला होता है 2. अचानक 3. हरियाली 4. छोटा जीव
5. चुपके से छूकर छुप जाना और फिर छूना 6. विशेष आदर 7. आदर का अभाव, तिरस्कार
8. प्रकट 9. कटु, कानों को न भाने वाली

www.ncertpdf.in

मेरे काकपुराण के विवेचन में अचानक बाधा आ पड़ी, क्योंकि गमले और दीवार की संधि में छिपे एक छोटे-से जीव पर मेरी दृष्टि रुक गई। निकट जाकर देखा, गिलहरी का छोटा-सा बच्चा है जो संभवतः घोंसले से गिर पड़ा है और अब कौवे जिसमें सुलभ आहार खोज रहे हैं।

काकद्वय[1] की चोंचों के दो घाव उस लघुप्राण के लिए बहुत थे, अतः वह निश्चेष्ट[2]-सा गमले से चिपटा पड़ा था।

सबने कहा, कौवे की चोंच का घाव लगने के बाद यह बच नहीं सकता, अतः इसे ऐसे ही रहने दिया जाए।

परंतु मन नहीं माना—उसे हौले से उठाकर अपने कमरे में लाई, फिर रुई से रक्त पोंछकर घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगाया।

रुई की पतली बत्ती दूध से भिगोकर जैसे-जैसे उसके नन्हे से मुँह में लगाई पर मुँह खुल न सका और दूध की बूँदें दोनों ओर ढुलक गईं।

कई घंटे के उपचार के उपरांत उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका। तीसरे दिन वह इतना अच्छा और आश्वस्त[3] हो गया कि मेरी उँगली अपने दो नन्हे पंजों से पकड़कर, नीले काँच के मोतियों जैसी आँखों से इधर-उधर देखने लगा।

तीन-चार मास में उसके स्निग्ध[4] रोएँ, झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकीली आँखें सबको विस्मित[5] करने लगीं।

हमने उसकी जातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक का रूप दे दिया और इस प्रकार हम उसे गिल्लू कहकर बुलाने लगे। मैंने फूल रखने की एक हलकी डलिया में रुई बिछाकर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया।

वही दो वर्ष गिल्लू का घर रहा। वह स्वयं हिलाकर अपने घर में झूलता और अपनी काँच के मनकों-सी आँखों से कमरे के भीतर और खिड़की से बाहर न जाने क्या देखता-समझता रहता था। परंतु उसकी समझदारी और कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था।

1. दो कौए 2. बिना किसी हरकत के 3. निश्चिंत 4. चिकना 5. आश्चर्यचकित

www.ncertpdf.in

जब मैं लिखने बैठती तब अपनी ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने की उसे इतनी तीव्र इच्छा होती थी कि उसने एक अच्छा उपाय खोज निकाला।

वह मेरे पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेज़ी से उतरता। उसका यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता जब तक मैं उसे पकड़ने के लिए न उठती।

कभी मैं गिल्लू को पकड़कर एक लंबे लिफ़ाफ़े में इस प्रकार रख देती कि उसके अगले दो पंजों और सिर के अतिरिक्त सारा लघुगात[1] लिफ़ाफ़े के भीतर बंद रहता। इस अद्‌भुत स्थिति में कभी-कभी घंटों मेज़ पर दीवार के सहारे खड़ा रहकर वह अपनी चमकीली आँखों से मेरा कार्यकलाप देखा करता।

भूख लगने पर चिक-चिक करके मानो वह मुझे सूचना देता और काजू या बिस्कुट मिल जाने पर उसी स्थिति में लिफ़ाफ़े से बाहर वाले पंजों से पकड़कर उसे कुतरता।

फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम बसंत आया। नीम-चमेली की गंध मेरे कमरे में हौले-हौले आने लगी। बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक-चिक करके न जाने क्या कहने लगीं?

गिल्लू को जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकते देखकर मुझे लगा कि इसे मुक्त करना आवश्यक है।

मैंने कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच ही मुक्ति की साँस ली। इतने छोटे जीव को घर में पले कुत्ते, बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या ही थी।

आवश्यक कागज़-पत्रों के कारण मेरे बाहर जाने पर कमरा बंद ही रहता है। मेरे कॉलेज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला गया और मैंने भीतर पैर रखा, वैसे ही गिल्लू अपने जाली के द्वार से भीतर आकर मेरे पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगा। तब से यह नित्य का क्रम हो गया।

---

1. छोटा शरीर

www.ncertpdf.in

मेरे कमरे से बाहर जाने पर गिल्लू भी खिड़की की खुली जाली की राह बाहर चला जाता और दिन भर गिलहरियों के झुंड का नेता बना हर डाल पर उछलता-कूदता रहता और ठीक चार बजे वह खिड़की से भीतर आकर अपने झूले में झूलने लगता।

मुझे चौंकाने की इच्छा उसमें न जाने कब और कैसे उत्पन्न हो गई थी। कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता, कभी परदे की चुन्नट में और कभी सोनजुही की पत्तियों में।

मेरे पास बहुत से पशु-पक्षी हैं और उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं है, परंतु उनमें से किसी को मेरे साथ मेरी थाली में खाने की हिम्मत हुई है, ऐसा मुझे स्मरण नहीं आता।

गिल्लू इनमें अपवाद[1] था। मैं जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती, वह खिड़की से निकलकर आँगन की दीवार, बरामदा पार करके मेज़ पर पहुँच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना चाहता। बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया जहाँ बैठकर वह मेरी थाली में से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफ़ाई से खाता रहता। काजू उसका प्रिय खाद्य[2] था और कई दिन काजू न मिलने पर वह अन्य खाने की चीज़ें या तो लेना बंद कर देता या झूले से नीचे फेंक देता था।

उसी बीच मुझे मोटर दुर्घटना में आहत होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब मेरे कमरे का दरवाज़ा खोला जाता गिल्लू अपने झूले से उतरकर दौड़ता और फिर किसी दूसरे को देखकर उसी तेज़ी से अपने घोंसले[3] में जा बैठता। सब उसे काजू दे आते, परंतु अस्पताल से लौटकर जब मैंने उसके झूले की सफ़ाई की तो उसमें काजू भरे मिले, जिनसे ज्ञात होता था कि वह उन दिनों अपना प्रिय खाद्य कितना कम खाता रहा।

मेरी अस्वस्थता में वह तकिए पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हे-नन्हे पंजों से मेरे सिर और बालों को इतने हौले-हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका[4] के हटने के समान लगता।

---

1. सामान्य नियम को बाधित या मर्यादित करने वाला 2. भोजन 3. नीड़, रहने की जगह 4. सेविका

गरमियों में जब मैं दोपहर में काम करती रहती तो गिल्लू न बाहर जाता न अपने झूले में बैठता। उसने मेरे निकट रहने के साथ गरमी से बचने का एक सर्वथा नया उपाय खोज निकाला था। वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठंडक में भी रहता।

गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती, अतः गिल्लू की जीवन यात्रा का अंत आ ही गया। दिन भर उसने न कुछ खाया न बाहर गया। रात में अंत की यातना में भी वह अपने झूले से उतरकर मेरे बिस्तर पर आया और ठंडे पंजों से मेरी वही उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न[1] स्थिति में पकड़ा था।

पंजे इतने ठंडे हो रहे थे कि मैंने जागकर हीटर जलाया और उसे उष्णता[2] देने का प्रयत्न किया। परंतु प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया।

उसका झूला उतारकर रख दिया गया है और खिड़की की जाली बंद कर दी गई है, परंतु गिलहरियों की नयी पीढ़ी जाली के उस पार चिक-चिक करती ही रहती है और सोनजुही पर बसंत आता ही रहता है।

सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गई है—इसलिए भी कि उसे वह लता सबसे अधिक प्रिय थी—इसलिए भी कि उस लघुगात का, किसी वासंती दिन, जुही के पीताभ[3] छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास, मुझे संतोष देता है।

बोध-प्रश्न

1. सोनजुही में लगी पीली कली को देख लेखिका के मन में कौन से विचार उमड़ने लगे?
2. पाठ के आधार पर कौए को एक साथ समादरित और अनादरित प्राणी क्यों कहा गया है?
3. गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार किस प्रकार किया गया?

1. जिसकी मृत्यु निकट हो, मृत्यु के समीप पहुँचा हुआ 2. गरमी 3. पीले रंग का

बोध-प्रश्न

1. सोनजुही में लगी पीली कली को देख लेखिका के मन में कौन से विचार उमड़ने लगे?
2. पाठ के आधार पर कौए को एक साथ समादरित और अनादरित प्राणी क्यों कहा गया है?
3. गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार किस प्रकार किया गया?

1. जिसकी मृत्यु निकट हो, मृत्यु के समीप पहुँचा हुआ 2. गरमी 3. पीले रंग का

www.ncertpdf.in

4. लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू क्या करता था?
5. गिल्लू को मुक्त करने की आवश्यकता क्यों समझी गई और उसके लिए लेखिका ने क्या उपाय किया?
6. गिल्लू किन अर्थों में परिचारिका की भूमिका निभा रहा था?
7. गिल्लू की किन चेष्टाओं से यह आभास मिलने लगा था कि अब उसका अंत समय समीप है?
8. 'प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया'—का आशय स्पष्ट कीजिए।
9. सोनजुही की लता के नीचे बनी गिल्लू की समाधि से लेखिका के मन में किस विश्वास का जन्म होता है?

© NCERT not to be republished

प्रश्नोत्तर

- **Question 1**: सोनजूही में लगी पीली कली को देख लेखिका के मन में कौन से विचार उमड़ने लगे?
- **उत्तर:** सोनजूही में लगी पीली कली को देख लेखिका को गिल्लू की याद आ गई। गिल्लू एक गिलहरी थी जिसकी जान लेखिका ने बचाई थी। उसके बाद से गिल्लू का पूरा जीवन लेखिका के साथ ही बीता था।
- **Question 2: पाठ के आधार पर कौए को एक साथ समादरित और अनादरित प्राणी क्यों कहा गया है?**
- **उत्तर:** हिंदू धर्म में ऐसी मान्यता है कि पितरपक्ष के समय हमारे पूर्वज कौवे के भेष में आते हैं। एक अन्य मान्यता है कि जब कौवा काँव काँव करता है तो इसका मतलब होता है कि घर में कोई मेहमान आने वाला है। इन कारणों से कौवे को सम्मान दिया जाता है। लेकिन दूसरी ओर, कौवे के काँव काँव करने को अशुभ भी माना जाता है। इसलिए कौवे को एक साथ समादरित और अनादरित प्राणी कहा गया है।
- **Question 3: गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार किस प्रकार किया गया?**
- **उत्तर:** गिलहरी के घायल बच्चे के घाव पर लगे खून को पहले रुई के फाहे से साफ किया गया। उसके बाद उसके घाव पर पेंसिलिन का मलहम लगाया गया। उसके बाद रुई के फाहे से उसे दूध पिलाने की कोशिश की गई जो असफल रही। लगभग ढ़ाई घंटे के उपचार के बाद गिलहरी के बच्चे के मुँह में पानी की कुछ बूँदें जा सकीं।
- **Question 4: लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू क्या करता था?**
- **उत्तर:** लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू उनके पैरों के पास आता और फिर सर्र से परदे पर चढ़ जाता था। उसके बाद वह परदे से उतरकर लेखिका के पास आ जाता था। यह सिलसिला तब तक चलता रहता था जब तक लेखिका गिल्लू को पकड़ने के लिए दौड़ न लगा देती थीं।

- **5: गिल्लू को मुक्त करने की आवश्यकता क्यों समझी गई और उसके लिए लेखिका ने क्या उपाय किया?**
- **उत्तर:** गिल्लू अब युवावस्था में प्रवेश कर रहा था। उसे एक जीवन साथी की जरूरत थी। इसलिए गिल्लू को मुक्त करने की आवश्यकता समझ में आई। इसके लिए लेखिका ने खिड़की की जाली का एक कोना अलग करके गिल्लू के लिए बाहर जाने का रास्ता बना दिया।
- **Question 6: गिल्लू किन अर्थों में परिचारिका की भूमिका निभा रहा था?**
- **उत्तर:** जब लेखिका बीमार पड़ीं तो गिल्लू उनके सिर के पास बैठा रहता था। वह अपने नन्हे पंजों से लेखिका के सिर और बाल को सहलाता रहता था। इस तरह से वह किसी परिचारिका की भूमिका निभा रहा था।
- Question 7: गिल्लू कि किन चेष्टाओं से यह आभास मिलने लगा था कि अब उसका अंत समय समीप है?
- **उत्तर: गिल्लू ने दिन भर कुछ नहीं खाया था। रात में वह बहुत तकलीफ में लग रहा था।** उसके बावजूद वह अपने झूले से उतरकर लेखिका के पास आ गया। गिल्लू ने अपने ठंडे पंजों से लेखिका कि अंगुली पकड़ ली और उनके हाथ से चिपक गया। इससे लेखिका को लगने लगा कि गिल्लू का अंत समय समीप ही था।
- **Question 8: 'प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया' – का आशय स्पष्ट कीजिए।**
- **उत्तर:** सुबह की पहली किरण निकलते ही गिल्लू के प्राण पखेरू उड़ गये। इस पंक्ति में लेखिका ने पुनर्जन्म की मान्यता को स्वीकार किया है। लेखिका को लगता है कि गिल्लू अपने अगले जन्म में किसी अन्य प्राणी के रूप में जन्म लेगा।
- **Question 9: सोनजूही की लता के नीचे बनी गिल्लू की समाधि से लेखिका के मन में किस विश्वास का जन्म होता है?**
- **उत्तर:** लेखिका को लगता है कि गिल्लू अपने अगले जन्म में सोनजूही के पीले फूल के रूप में आयेगा।

परियोजना कार्य(आर्ट-intigration)

- गिल्लू का कोई भी चित्र A4size paper में बनाइए |

Extra questions

1 गिल्लू लेखिका को किस परिस्थिति में मिला था? लेखिका ने उसका उपचार किस संवेदनशीलता के साथ किया?

उत्तर एक दिन सवेरे टहलते समय लेखिका को गिलहरी का एक छोटा-सा बच्चा गमले में निश्चेष्ट-सा (बिना किसी हरकत के) पड़ा मिला था, जिसे कौवों ने अपनी चोंच से बुरी तरह घायल कर दिया था। लेखिका उसे धीरे से उठाकर अपने कमरे में लाई, फिर रूई से खून पोंछकर उसके घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगाया। रूई की पतली बत्ती दूध से भिगोकर उसे धीरे-धीरे दूध पिलाया पर दूध की बूँदें उसके मुँह के दोनों तरफ गिर गईं।

दो दिनों तक देखभाल करने के बाद तीसरे दिन वह अच्छा और भयमुक्त हो पाया। इसके बाद वह लेखिका की उंगली अपने दो नन्हें पंजों से पकड़कर नीले काँच की मोतियों जैसी आँखों से इधर-उधर देखने लगा। लेखिका ने उसका उपचार बड़ी ही संवेदनशीलता के साथ किया। जिस प्रकार एक व्यक्ति की देखभाल की जाती है, ठीक उसी प्रकार लेखिका ने गिल्लू की देखभाल की।

2 लेखिका के पास कई पशु-पक्षी थे, जिनसे लेखिका का पशु-पक्षी प्रेम स्पष्ट होता है। इसके बावजूद गिल्लू उनमें विशिष्ट कैसे था?

उत्तर लेखिका के पास बहुत से पशु-पक्षी थे, जिनसे लेखिका का गहरा लगाव था। उनमें से किसी को भी लेखिका के साथ लेखिका की थाली में खाने की छूट नहीं थी, लेकिन गिल्लू उनमें अपवाद था। लेखिका जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती, गिल्लू खिड़की से निकलकर आँगन, दीवार, बरामदा पार करके मेज़ पर पहुँच जाता और लेखिका की थाली में बैठ जाना चाहता। लेखिका ने बड़ी मुश्किल से उसे थाली के पास बैठना सिखाया, जहाँ बैठकर वह लेखिका की थाली में से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफ़ाई से खाता रहता। इस गतिविधि से पता चलता है कि लेखिका के पास रहने वाले पशु-पक्षियों में गिल्लू सर्वाधिक विशिष्ट था।

CS Scanned with CamScanner

3 गिल्लू को मुक्त क्यों और कैसे किया गया? इससे लेखिका की मानवीयता कैसे प्रदर्शित होती है?

उत्तर गिल्लू के जीवन में प्रथम वसंत आने पर बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक-चिक करके कुछ कहती रहतीं और गिल्लू जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकता रहता। इस स्थिति को देखकर लेखिका को लगा कि गिल्लू को मुक्त करना आवश्यक है, इसलिए लेखिका ने कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर मुक्ति की साँस ली। इस प्रकार लेखिका ने गिल्लू को मुक्त कर दिया। अब वह हमेशा इस रास्ते से बाहर जाकर विहार (घूमने) करने लगा। लेखिका ने

Scanned with CamScanner

ऐसा करके अपनी मानवीय भावना को प्रदर्शित किया है। वह प्राणी मात्र के लिए स्वतंत्रता की पक्षधर रही हैं। केवल मनुष्य ही नहीं, बल्कि प्रत्येक प्राणी को स्वतंत्र रहने का अधिकार है और साथ ही किसी अन्य प्राणी को उस पर प्रतिबंध लगाने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है। लेखिका इस विचार की घोर समर्थक रही हैं।

4 अस्वस्थ लेखिका का ध्यान गिल्लू किस प्रकार रखता था? इस कार्य से गिल्लू की कौन-सी विशेषता का पता चलता है?

उत्तर गिल्लू लेखिका से बहुत प्रेम करता था। वह लेखिका के साथ खेलता था, उसके साथ एक ही थाली में भोजन करता था। एक बार लेखिका को मोटर दुर्घटना में घायल होने के कारण कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा। लेखिका की अनुपस्थिति में गिल्लू का किसी काम में भी मन नहीं लगता था। गिल्लू रोज़ लेखिका के आने की राह देखता रहता, परंतु दूसरों को देखकर निराश लौट जाता। इस दौरान उसने अपना प्रिय भोजन काजू भी नहीं खाया। लेखिका के घर लौटने पर वह तकिए पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हें-नन्हें पंजों से लेखिका के सिर और बालों को धीरे-धीरे सहलाता रहता। इस कार्य से वह लेखिका को एक परिचारिका जैसा लगने लगा था। इन गतिविधियों से गिल्लू के अंदर मौजूद सेवा भाव वाली मानवीय विशेषता का पता चलता है, साथ ही यह भी ज्ञात होता है कि गिल्लू लेखिका से बहुत प्रेम करता था।

CS Scanned with CamScanner

5 "गिल्लू एक संवेदनशील प्राणी है।" कैसे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर गिल्लू एक संवेदनशील प्राणी हैं। प्रस्तुत पाठ में गिल्लू ने अपने संवेदनशील होने के कई प्रमाण दिए हैं। लेखिका महादेवी वर्मा ने जब अस्वस्थ गिल्लू का उपचार किया, तो स्वस्थ होते ही उसने अपने पंजों से लेखिका की उँगली को पकड़ लिया। एक प्रकार से उसने लेखिका को धन्यवाद दिया। वह धीरे-धीरे महादेवी जी के साथ घुल-मिल गया, अपनी क्रीड़ाओं में वह उन्हें शामिल करने की कोशिश करता था। उसने भोजन खाने के लिए थाली के पास बैठना भी सीख लिया।

गिल्लू की संवेदनशीलता का गहन परिचय दो मुख्य घटनाओं से मिलता है। एक यह कि जब महादेवी जी बीमार थीं और अस्पताल में रहीं, तब गिल्लू ने अपना प्रिय भोजन काजू भी खाना छोड़ दिया। दूसरी यह कि जब महादेवी जी अस्पताल से घर लौटीं तो गिल्लू उनके सिरहाने बैठा रहता। वह एक कुशल परिचारिका की तरह अपने नन्हें-नन्हें पंजों से महादेवी का सिर और बाल सहलाता रहता था। इस प्रकार, इन घटनाओं से स्पष्ट हो जाता है कि गिल्लू एक संवेदनशील प्राणी है।

Scanned with CamScanner

6 हमारा पशु–पक्षियों के प्रति क्या कर्तव्य होना चाहिए? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर पशु-पक्षी प्रकृति तथा हमारे समाज का अभिन्न अंग होते हैं। वे हमारे सहयोगी भी होते हैं। इसलिए उनके प्रति हम सबके कुछ कर्तव्य है जिनका पालन प्रत्येक मनुष्य को करना चाहिए। पशु-पक्षियों को किसी भी तरह की हानि नहीं पहुँचानी चाहिए। आहत, निरीह एवं मूक पशु-पक्षियों की सुरक्षा एवं सेवा करना हमारा पहला कर्तव्य है। पशु-पक्षी अपना दुख-दर्द जता नहीं सकते, ऐसी स्थिति में मनुष्य को उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले जाकर उनकी मरहम पट्टी की व्यवस्था करनी चाहिए। उन्हें स्वच्छंद वातावरण में उन्मुक्त हो अपना स्वाभाविक विकास करने में हर संभव मदद करनी चाहिए।

हमें पशु-पक्षियों के प्रति सद्व्यवहार अपनाना चाहिए। साथ ही हमें अपने अंदर उनके संरक्षण की भावना उत्पन्न करनी चाहिए तथा उनसे किसी भी प्रकार की हिंसा नहीं करनी चाहिए। इस प्रकार का दृष्टिकोण अपनाकर मनुष्य तथा पशु-पक्षियों के बीच आत्मीय संबंध स्थापित किए जा सकते हैं।

7 "गिल्लू को लेखिका का साथ अत्यधिक पसंद था"—इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर *गिल्लू वास्तव में एक अत्यधिक संवेदनशील प्राणी था और उसे लेखिका महादेवी वर्मा से गहरा लगाव था। पाठ के अंतर्गत इसके कई प्रमाण विद्यमान हैं*

(*i*) जब भी लेखिका महादेवी वर्मा अपना कमरा खोलकर अंदर घुसती थीं, तो गिल्लू उनके शरीर पर ऊपर से नीचे दौड़ने लगता था, लेकिन यदि कोई अन्य व्यक्ति अंदर आता, तो वह ऐसा नहीं करता था।

(*ii*) गर्मियों के दिनों में वह लेखिका के पास रहने के लालच में उनके पास रखी सुराही के साथ चिपका रहता था।

CS Scanned with CamScanner

8 गिल्लू कहानी हमारे स्वभाव में जीव-प्रेम को किस प्रकार विकसित करती है? गिल्लू कहानी के आधार पर लिखिए।

अथवा गिल्लू कहानी से हमें क्या संदेश मिलता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर गिल्लू कहानी, लेखिका महादेवी वर्मा के जीव-प्रेम को अभिव्यक्त करती है। लेखिका ने घायल गिलहरी के बच्चे का उपचार किया, उसके रहने तथा खाने का अपने घर में प्रबंध किया। एक तरह से अपने परिवार के सदस्य की तरह उसे पाला। थोड़े ही समय में लेखिका और गिल्लू के बीच बड़े ही मधुर संबंध बन गए।

इस कहानी से यह संदेश मिलता है कि जीव-जंतुओं को प्यार तथा आत्मीयता से पालकर हम उन्हें घर के सदस्य के समान रख सकते हैं। प्यार में वह ताकत होती है कि बेज़ुबान जीव-जंतु भी हमें सच्चे अर्थों में परिचारिका की भाँति प्रेम दे सकते हैं। हमारे जीवन के सूनेपन के अभाव को दूर कर सकते हैं। वे हमारे अंदर दया-भाव का संचार करते हैं तथा हमें प्रकृति की ओर मोड़ते हैं। इस प्रकार यह कहानी हमारे स्वभाव में जीव-प्रेम को विकसित करते हुए यह प्रेरणा देती है कि हम अपने प्यार, अपनत्व तथा ममत्व से किसी भी जीव को अपना मित्र बना सकते हैं।

CS Scanned with CamScanner

- धन्यवाद